अमरत्व
शिक्षक सहायक पुस्तिका–6

पाठ 1. अरुण यह मधुमय देश हमारा

- **पाठ उद्देश्य**–प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कराते हुए देश की महानता से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–भारत के सूर्योदय का दृश्य मनोरम है। सूर्योदय के कारण चारों ओर लालिमा हो गई है। यहाँ आकर अनजान क्षितिज को भी सहारा मिल जाता है। सूर्य की किरणें कमल पत्तों पर और वृक्षों की चोटियों पर नृत्य करने लगी हैं। चारों ओर हरियाली फैली हुई है। इस हरियाली पर सूर्य की किरणों ने मंगलमय कुंकुम बिखेर दिया है। प्रातः काल में मलय पर्वत की सुगंधित हवा ने वातावरण को सुगंधित कर दिया है। शीतल हवा के सहारे छोटे-छोटे इंद्रधनुषों से रंग-बिरंगे पंखों वाले पक्षी भारत को अपना नीड़ समझकर इसकी ओर आ रहे हैं। बादल गर्मी से तपे वृक्षों को नवजीवन देते हैं, वैसे ही यहाँ के निवासी करुणामय हैं। समुद्र की विशाल थकी लहरें इसके किनारों पर आकर शांत हो जाती हैं। सोने का घड़ा लेकर उषा रूपी स्त्री उसका जल इस भूमि पर उड़ेल देती है। रात भर जागते रहने के कारण तारे ऊँघने लगे हैं। उनके छिपने का समय हो गया है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) भारत मधुरता से भरा हुआ है इसलिए इसे मधुमय कहा गया है।
   (ख) अपरिचित व्यक्तियों को भी यहाँ सहारा मिल जाता है।
   (ग) बादल वर्षा करके गर्मी को हर लेते हैं इसी प्रकार भारतीयों में करुणा का भाव है। बादल इसके प्रतीक हैं।

(घ) सूर्य की किरणों के प्रकाश से वृक्षों के पत्ते नृत्य करते दिखते हैं।

2. (क) हेम-कुंभ का अर्थ है सोने का घड़ा या स्वर्ण-पात्र।

(ख) सूर्य की किरणों का हरियाली पर पड़ा प्रकाश मंगल कुंकुम-सा लगता है।

(ग) सूर्योदय से पूर्व भोर में तारे छिपने लगते हैं।

3. (क) नभ, गगन (ख) वायु, पवन

(ग) खग, पक्षी (घ) देवालय, पूजास्थल

(ङ) निशा, रात्रि ।

4. जहाँ पहुँचकर अपरिचित क्षितिज को भी सहारा मिल जाता है। ऐसा लगता है मानों वृक्षों की चोटियों पर और कमल–पत्तों पर सूर्य की किरणें नृत्य करने लगती हैं। इस जीवन रूपी हरियाली पर किरणों ने सारा मंगल कुंकुम बिखेर दिया है। शीतल मलय पर्वत के पवन के सहारे छोटे–छोटे इंद्रधनुषी पंखों वाले अपना नीड़ समझकर पक्षी इसकी ओर आ रहे हैं।

5. अरुण, क्षितिज, तामरस, गर्भ, कुंकुम।

6. नाच रही तरुशिखा मनोहर, मंगल कुंकुम सारा, लघु सुरधनु से पंख पसारे, समझ नीड़ निज प्यारा।

7. (क) सूर्य विभा पत्तों पर छाई।

(ख) पक्षी नीड़ में आ गए।

(ग) मंगल कुंकुम बिखर गया।

(घ) सुंदर अनुपम देश हमारा।

(ङ) लहरों को किनारा मिल गया।

मूल्याधारित प्रश्न

(क) प्राचीनकाल से भारत ने अनेक विदेशियों को शरण दी है। मैं इससे सहमत हूँ। भारत को इसलिए शरणागत वत्सल कहा जाता हैं।

(ख) विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

पाठ 2. दो गज़ ज़मीन

- **पाठ उद्देश्य**–अधिक लालच जानलेवा भी हो सकता है, इसे समझाना।
- **पाठ सार**–दीना किसान था। एक दिन उसके पास एक व्यापारी आया। उसने बताया कि उसने पाँच सौ रुपयों में नर्मदा पार 1500 एकड़ ज़मीन खरीदी है। दीना मित्र के साथ वहाँ पहुँचा। उसने वहाँ के मुखिया से ज़मीन का भाव पूछा। सरदार ने बताया कि एक दिन का एक हज़ार। दीना ने इसे स्पष्ट करने के लिए कहा तो सरदार ने बताया कि एक दिन में पैदल चलकर जितनी ज़मीन नाप लोगे उसके एक हजार लगेंगे। सरदार ने कहा कि एक शर्त है, जहाँ से चलोगे सूर्यास्त तक वहीं वापस आना पड़ेगा। दीना प्रसन्न होकर अगले दिन सरदार के पास पहुँचा। सरदार ने अपनी टोपी उतार कर रख दी और कहा कि संध्या तक यहाँ आ जाना। दीना ने टोपी पर रुपए रख दिए। वह एक हज़ार गज़ दूरी तक गया। वहाँ गड्डा किया। आगे जाकर दूसरा गड्डा किया। दोपहर हो गई उसने एक जगह रुककर खाना खाया, पानी पिया। वह आगे बढ़ता गया। गरमी बढ़ती गई। वह चलता गया। सूरज ढलने को था। वह लौटने लगा। वह बुरी तरह थक गया था। उसमें एक कदम चलने की हिम्मत न रही। उसे दूर टीले पर टोपी दिखाई दे रही थी। वह जैसे–तैसे टोपी तक पहुँचा और गिरकर मर गया। उसके नौकर ने

कब्र खोदकर उसे उसमें लिटा दिया। सिर से पाँव तक उसे दो गज़ ज़मीन ही मिली।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) सौदागर ने नर्मदा पार पाँच सौ रुपए में 1500 एकड़ ज़मीन खरीदने के बारे में बताया।
   (ख) दीना ने दूर दूर तक ज़मीन देखी।
   (ग) सरदार ने बताया कि एक दिन का एक हज़ार। उसने शर्त रखी कि जहाँ से चलोगे शाम तक वहीं लौटना होगा।
   (घ) लौटते समय दीना चलने में असमर्थ हो गया।
2. (क) सौदागर ने विश्वास दिलाया कि उसने ज़मीन खरीदी है।
   (ख) दूर-दूर तक ज़मीन देखकर दीना की आँखें चमक उठीं।
   (ग) दीना जैसे-जैसे बढ़ता जाता था उसे ज़मीन और अच्छी दिखाई देती थी। लालच में आकर वह आगे बढ़ता गया।
3. (क) सौदागर ने दीना से कहा।
   (ख) दीना ने सरदार से कहा।
   (ग) दीना ने सरदार से कहा।
   (घ) सरदार ने दीना से कहा।
4. (क) एक किसान (ख) नर्मदा
   (ग) 1500 एकड़ (घ) एक हज़ार
   (ङ) छह फुटा।
5. (क) दस्तावेज़ (ख) बिलकुल सच
   (ग) मुखिया (घ) पहर
   (ङ) दो तिहाई।
6. (क) शुरुआती, पहला (ख) सूखा
   (ग) मुश्किल (घ) अँधेरा
   (ङ) सख्त।

7. (क) मुश्किल (ख) सख्त
(ग) दुखी (घ) अच्छाई
(ङ) अमीर।

मूल्याधारित प्रश्न

(क) सौदागर की बात सुनकर दीना सोचने लगा कि वह एक हज़ार एकड़ के लिए दो–तीन हज़ार रुपए क्यों फँसाए? वह अधिक ज़मीन खरीदकर अमीर बनने के सपने देखने लगा। उसके लालच ने उसे मार डाला।

(ख) दीना के मर जाने पर उसके हिस्से दो गज़ ज़मीन ही आई। इसलिए यह शीर्षक उपयुक्त है।

पाठ 3. हम पंछी उन्मुक्त गगन के

- **पाठ उद्देश्य**–पक्षियों के माध्यम से स्वंतत्रता के महत्व को समझाना।
- **पाठ सार**–हम खुले आकाश में विचरण करने वाले पक्षी हैं। हम पिंजरे में बंद होकर गा नहीं सकेंगे। पिंजरे की सोने की तीलियों से टकराकर हमारे पुलकित पंख टूट जाएँगे। सोने की जज़ीर के बंधन में बँधकर हम अपनी गति और उड़ान भूल गए हैं। अब केवल वृक्ष की सबसे ऊँची टहनी पर झूला झूलने के सपने देखते हैं। हमारे अरमान थे कि हम आकाश की सीमा पाने के लिए उड़ते हुए लाल किरणों के समान अपनी लाल चोंच से अनार के दानों रूपी तारों को चुगते। हम सीमाहीन क्षितिज को छूने के लिए उसके साथ प्रतियोगिता करते। हम या तो क्षितिज को छू लेते या हमारी साँसें टूट जातीं। हमें टहनी पर बना घोंसला मत दो, हमारा आश्रय तोड़ डालो, परंतु पंख दिए हैं तो उड़ान भरने के लिए व्याकुल इन पंखों के मार्ग में बाधा मत डालो।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) पक्षियों के पंख पिंजरे की सोने की तीलियों से टकारकर टूट जाएँगे।
   (ख) सोने की जंज़ीरों में बँधकर पक्षी अपनी गति और उड़ान भूल गए हैं। पक्षी स्वतंत्र रहकर पेड़ की फुनगी पर झूलना चाहते थे। वे आकाश की सीमा पाना चाहते थे। वे अपनी लाल चोंच से अनार के समान तारों के दाने चुगना चाहते थे।

2. (क) पक्षी उड़कर आकाश की सीमा जान लेते या उनकी साँसें टूट जातीं।
   (ख) यदि हमें पंख दिए हैं तो उड़ान भरने के लिए व्याकुल हमारे मार्ग में बाधा न डालो।

3. (क) हम उन्मुक्त गगन में उड़ना चाहते हैं।
   (ख) पिंजरा स्वर्ण तीलियों से बना है।
   (ग) पक्षियों का अरमान है क्षितिज को छूना।
   (ग) किरण के समान अनार के चमकते दाने।

4. पक्षी कहते हैं कि हमें टहनी पर बना घोंसला मत दो, हमारा आश्रय तोड़ डालो। यदि पंख दिए हैं तो हमें उड़ने दो। हम उड़ने के लिए व्याकुल हैं। पक्षी स्वंतत्र जीना चाहते हैं।

5. गति–चाल अरमान–इच्छा
   उन्मुक्त–स्वंतत्र पुलकित–प्रसन्न
   नीड़–घोंसला।

6. (क) नभ, आकाश (ख) पानी, नीर
   (ग) सोना, कनक (घ) पेड़, वृक्ष
   (ङ) कामना, इच्छा।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) उस घर में जो नए लोग आए हैं उनसे अनुरोध करेंगे कि पक्षी के आवास को सुरक्षित रखें।

(ख) प्रत्येक प्राणी पर्यावरण का अंग होता है। पक्षियों को बंदी बनाना पर्यावरण को प्रभावित करता है। इसलिए उन्हें स्वतंत्र रहने देना चाहिए।

पाठ 4. ईदगाह

◆ **पाठ उद्देश्य**–बच्चों की मानसिकता और मेलों की परंपराओं से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–बच्चों में रोजों से अधिक ईद मनाने का उत्साह होता है। ईद मनाने के लिए बच्चे हिसाब लगाते हैं। महमूद के पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। वे उनसे खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंदें आदि लाने के विषय में सोच रहे हैं। चार-पाँच साल का हामिद दुबला-पतला अनाथ है, गरीब है। दादी अमीना के साथ रहता है। वह सोचता है अब्बाजान रुपए कमाने गए हैं, रुपयों से भरी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह से अच्छी-अच्छी चीज़ें लाएँगी। इसलिए वह खुश रहता है। अमीना बचाए हुए पैसों से हामिद को मेला देखने के लिए तीन पैसे देती है। बच्चे मेला देखने चल पड़े। हामिद सबसे अधिक उत्साहित था। ईदगाह में नमाज पढ़ी गई। सब मिठाई और खिलौनों की दुकानों पर पहुँचे। हामिद को मिट्टी के खिलौने खरीदना अच्छा नहीं लगता क्योंकि उनके गिरकर टूट जाने का भय रहता है। वह खिलौनों को ललचाई नज़रों से देखता है। उसके साथी मिठाइयाँ लेते हैं। हामिद को ललचाते हैं। वह झूला नहीं झूलता क्योंकि एक पैसा कम हो जाएगा। वह लोहे की दुकान पर जाता है। चिमटा देखकर उसे दादी

का ध्यान आता है। तवे से रोटी उतारते समय दादी का हाथ जल जाता था। उसने चिमटे का दाम पूछा दुकानदार ने छह पैसे बताया। मोल-भाव के बाद दुकानदार ने चिमटा तीन पैसे में दे दिया। चिमटा लेकर हामिद दोस्तों के पास आया और चिमटे की प्रशंसा करके धाक जमा ली। मेला देखकर सब घर आ गए। चिमटा देखकर दादी ने उसे डाँटकर पूछा, यह चिमटा क्यों लाया है? हामिद ने कहा कि तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए तुम्हारे लिए लाया हूँ। अपने प्रति हामिद का प्रेम देखकर दादी रोने लगी।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) लोग कुरते पर बटन लगाने के लिए पड़ोस से सुई-धागा लाने जा रहे हैं, कोई जूते नरम करने के लिए उनमें तेल डाल रहा है। कोई बैलों को पानी दे देना चाहता है।
   (ख) लड़कों को ईदगाह जाने की जल्दी पड़ी है ताकि वे मेला देख सकें। इसलिए वे सबसे अधिक प्रसन्न हैं।
   (ग) हामिद के अब्बा की मृत्यु हैज़े से और अम्मा की मृत्यु पीलिया रोग से हुई थी।
   (घ) हामिद ने मेले से दादी के लिए चिमटा खरीदा था, क्योंकि रोटी बनाते समय उसके हाथ तवे से जल जाते थे।
2. (क) वे तर्क दे रहा था कि खिलौने गिरकर, पानी लगने से नष्ट हो जाएँगे। इस तरह वह स्वयं को तसल्ली दे रहा था।
   (ख) हामिद के यह कहने पर कि दादी के हाथ तवे पर जल जाते थे, उसने इसलिए चिमटा खरीदा था, दादी का क्रोध स्नेह में बदल गया।
   (ग) इस कहानी में बच्चों का भोलापन और हामिद का चिमटा खरीदना सबसे अच्छा लगा।

3. महमूद–सिपाही, मोहसिन–भिश्ती, हामिद–चिमटा, सम्मी–खंजरी।

4. (क) ईद (ख) ईदगाह
   (ग) आबिद (घ) छह पैसे
   (ङ) तीन।

5. (क) अब्बाजान चौधरी से पैसे उधार लेने जा रहे थे। यदि चौधरी पैसे देने से मना कर देता तो बच्चे ईद न मना पाते। ईद की खुशियाँ मुहर्रम के शोक में बदल जातीं।
   (ख) दादी अमीना ने जब चिमटे को देखा तो उसे दु:ख हुआ कि हामिद ने मेले का आनंद लेने में पैसे खर्च नहीं किए थे बल्कि चिमटा ले आया था।
   (ग) अमीना अपने पुत्र आबिद के बारे में सोच रही थी कि वह होता तो ईद का नया रूप होता। हामिद को मरने–जीने का क्या पता, वह बालक था। उसके मन में रोशनी थी, आशाएँ थीं। वह उत्साह में डूबा हुआ था। मुसीबतें पूरी तैयारी करके आ जाएँ तो भी उसके आंनद से भरी आँखें उनका अंत कर देंगी।

6. (क) हामिद ने दादी से कहा।
   (ख) मोहसिन ने हामिद से कहा।
   (ग) दुकानदार ने हामिद से कहा।
   (घ) दादी ने हामिद से कहा।

7. (क) दादी अमीना हामिद के चिमटा लाने पर सोचती है कि उसमें त्याग कि कितनी गहरी भावना है। उसमें दूसरों का भला करने की भावना है। उसमें कितनी समझ है।
   (ख) हामिद को आशा है कि उसके अब्बा बहुत धन लेकर लौटेंगे। उसकी अम्मी अल्लाह से अच्छी–अच्छी चीज़ें लाएगी। बच्चों की आशाओं का कोई सानी नहीं होता, वे

कल्पनाओं में डूबकर छोटी-सी राई को विशाल पर्वत बना देते हैं।

(ग) चिमटे को देखकर दादी क्रोधित हो गई थी परंतु चिमटा खरीदने के कारण को जानकर उसका क्रोध स्नेह में बदल गया। यह स्नेह बोलकर नहीं खामोश रहकर प्रकट हो रहा था। इसमें रस था, स्वाद था।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) हामिद जानता था कि मिट्टी के खिलौने टूट जाएँगे। इसलिए उसने खिलौने नहीं खरीदे। यदि मैं उसके स्थान पर होती/होता तो मैं भी यही करती/करता।

(ख) मुसलमान ईदगाह में एक साथ नमाज़ पढ़ते हैं। वे एक साथ झुकते हैं, एक साथ घुटनों के बल बैठते हैं। उन्हें देखकर लगता है उन्हें भाईचारे के एक धागे में पिरो दिया गया है। उनके इस रूप से लगता है कि धर्म लोगों को जोड़ता है तोड़ता नहीं है।

पाठ 5. कबीर वाणी

- **पाठ उद्देश्य**–कबीर के दोहों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों से परिचित कराकर शिक्षा दिलाना।
- **पाठ सार**–जहाँ दया होती है, वहाँ धर्म होता है, जहाँ लोभ होता है, वहाँ पाप होता है। जहाँ क्रोध होता है वहाँ मौत होती है। जहाँ क्षमा होती है वहाँ ईश्वर स्वयं होता है। साधु की जाति नहीं ज्ञान पूछना चाहिए। म्यान को छोड़ देना चाहिए तलवार का मूल्य जानना चाहिए। कबीर कहते हैं कि जाति नहीं ज्ञान का महत्व होता है, जैसे म्यान का नहीं तलवार का महत्व होता है।

  पत्थर की पूजा करने से यदि भगवान मिल जाएँ तो मैं पहाड़ की पूजा करूँगा। इससे तो पत्थर की चक्की अच्छी होती है, जिससे

गेहूँ को पीसकर आटा निकलता है जिसे सारा संसार खाता है।

कंकरों और पत्थरों को जोड़कर मस्जिद बना ली गई है। उस पर चढ़कर मुर्गा बांग देता है। क्या खुदा बहरा है?

संसार में जिसने भी जन्म लिया है, वह अवश्य मरेगा, वह चाहे राजा हो, भिखारी हो या फ़कीर हो। एक की अर्थी सिंहासन की तरह सजी निकलती है, एक की अर्थी रस्सियों अर्थात् जंज़ीरों में बाँधकर निकलती है। पाँवों के नीचे आने वाले तिनके की निंदा नहीं करनी चाहिए। वह उड़कर आँखों में पड़ जाता है तो बहुत पीड़ा देता है।

हिंदू कहते हैं कि उन्हें राम प्रिय हैं और मुसलमान कहते हैं कि उन्हें रहमान प्रिय है। दोनों आपस में लड़कर मर जाते हैं। वे ईश्वर को नहीं जानते। भगवान इतना दें कि जिसमें परिवार का गुजर-बसर हो जाए। मैं भी भूखा न रहूँ और द्वार पर आया साधु भी भूखा न जाए।

पाठ मूल्याधारित उत्तर

1. (क) लोग जब लोभ नहीं करेंगे।
   (ख) हमें साधु से उसके ज्ञान के बारे में पूछना चाहिए।
   (ग) वे लोग अंधे हैं जो पत्थरों में भगवान को खोजते हैं।
   (घ) छोटे से छोटे व्यक्ति का अपमान नहीं करना चाहिए, न जाने वह कब हानि पहुँचा दे।
2. (क) नोट–इस तरह का कोई दोहा नहीं है।
   (ख) तिनका कबहुँ न निदिंये दोहे में।
   (ग) क्योंकि वे भगवान के रूप से परिचित नहीं हैं।
3. (क) कंकड़ (ख) मर्म
   (ग) मृत (घ) एक
   (ङ) पावन दोनों, विद्वि

4. (क) देखें पाठ सार, दोहा-8 (ख)देखें पाठ सार, दोहा-8

5. (क) अधर्म (ख) शैतान
   (ग) अज्ञान (घ) पुण्य
   (ङ) शिष्य।

6. (क) कष्ट, पीड़ा (ख) शैतान, असाधु
   (ग) नृप, नरेश (घ) नेत्र, नयन।

7. (क) स्त्रीलिंग (ख) स्त्रीलिंग
   (ग) स्त्रीलिंग (घ) स्त्रीलिंग
   (ङ) पुल्लिंग।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) दया और धर्म का आपस में गहरा संबंध है। धर्म ही दया का महत्व बताता है। जो दया करता है वह धर्म को मानता है। मैं कबीर के विचार से सहमत हूँ।

(ख) कबीर दया को धर्म का रूप मानते हैं। वे लोभ को बुरा अर्थात् पाप मानते हैं। कबीर के दोहे वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं क्योंकि ये जीवन से जुड़े हुए हैं।

पाठ 6. अभागा बुनकर

◆ **पाठ उद्देश्य**–धन के लोभ में पड़कर गलत कार्य नहीं करने चाहिए, इसे स्पष्ट कराना।

◆ **पाठ सार**–सोमलिक जुलाहा बहुत सुंदर वस्त्र बुनता था। परंतु उसके वस्त्र नहीं बिकते थे। उसने विदेश जाकर धन कमाने का निश्चय किया। पत्नी ने समझाया कि जो भाग्य में लिखा है यहीं मिल जाएगा। विदेश मत जाओ सोमलिक न माना और वर्धमानपुर जाकर तीन वर्षों में तीन सौ रुपए कमाकर घर की ओर चल पड़ा।

रात हुई तो वह वृक्ष पर चढ़कर सो गया। उसने सपने में दो पुरुषों को बातें करते सुना। एक ने कहा कि तुम जानते हो कि सोमलिक के पास भोजन–वस्त्र से अधिक धन नहीं रहेगा। तुमने इसे तीन सौ मुहरें क्यों दीं? दूसरे ने कहा कि यह पुरुषार्थी है, मैं इसका फल इसे अवश्य दूँगा। उसके पास मुहरें रहने या न रहने का अधिकार तुम्हारे पास है। सोमलिक की नींद खुली तो मुहरें गायब थीं। वह फिर वर्धमानपुर गया। उसने वर्ष भर में पाँच सौ मुहरें कमाईं और घर की ओर चल पड़ा। उसे रास्ते में उन्हीं व्यक्तियों की वैसी ही बातचीत सुनाई दी। उसकी मुहरें गायब हो गईं। दुखी होकर वह फंदा लगाकर टहनी से लटकने लगा तो आकाशवाणी हुई कि तुम मरो मत। तुम्हारे भाग्य में भोजन–वस्त्र से अधिक का धन नहीं है। घर लौट जाओ। कोई वरदान माँग लो। सोमलिक ने बहुत अधिक धन माँगा। देवता ने कहा वर्धमान जाकर गुप्तधन और उपयुक्त धन के यहाँ जाकर रहो। फिर जो वरदान माँगोगे मैं अवश्य धन दे दूँगा। सोमलिक गुप्त धन के यहाँ गया। गुप्तधन ने उसे रूखी–सूखी रोटी दी। सोमलिक सो गया। सपने में वही दो देव आए। पहला कहने लगा कि तुमने गुप्तधन को इतना धन क्यों दिया कि वह सोमलिक को रोटी दे दे। पौरुष देव ने कहा मैंने धर्म का पालन कराया है। फल देना तेरा काम है। अगले दिन गुप्तधन का पेट खराब हो गया। उसे उपवास करना पड़ा। इस तरह उसका भोजन बच गया। सोमलिक ने अगले दिन उपयुक्त धन के घर खाना खाया। रात को फिर दोनों में बातचीत हुई। एक कह रहा था उपयुक्त धन ने इसे खाना खिलाया है। अब उपयुक्त धन की भरपाई कैसे होगी? दूसरे ने कहा धर्म के लिए धन देना मेरा धर्म था, फल तुम्हारे अधीन है। सुबह राजा का एक कर्मचारी उपयुक्त धन को धन भेंट कर गया। सोमलिक ने निर्णय किया कि सत्कार्यों में किया धन ही जमा किए धन से श्रेष्ठ होता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) क्योंकि वह अपने यहाँ अधिक नहीं कमा पा रहा था।
   (ख) क्योंकि उसकी पाँच सौ मुहरें गायब हो गई थीं।
   (ग) देवता ने उसे वर्धमानपुर जाकर गुप्तधन और उपयुक्त धन के यहाँ जाकर रहने और तब वरदान माँगने के लिए कहा।
   (घ) गुप्तधन ने सोमलिक को अनिच्छा से खाना खिलाया। उपयुक्त धन ने उसे सत्कारपूर्वक खाना खिलाया।

2. (क) पत्नी ने कहा कि वह विदेश न जाकर यहीं रहे।
   (ख) सोमलिक ने धन के महत्व को बताया।
   (ग) सोमलिक धन कमाने वर्धमान गया था। उसने परिश्रमपूर्वक धन कमाया।

3. (क) पत्नी ने सोमलिक से कहा।
   (ख) देवता ने सोमलिक से कहा।
   (ग) एक देव ने दूसरे देव से कहा।
   (ग) देवता ने सोमलिक से कहा।

4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
   (घ) ✗ (ङ) ✗

5. (क) सोमलिक ने सुंदर वस्त्र बनाए।
   (ख) सोमलिक वस्त्र बुनने का व्यवसाय करता था।
   (ग) सोमलिक ने परिश्रम करके धन कमाया।
   (घ) उपयुक्तधन ने सोमलिक का सत्कार किया।
   (ङ) देवता ने वरदान दिया।

6. **पहला देव**–तुमने सोमलिक को मुहरें क्यों दीं?
   दूसरा देव–जो परिश्रम करता है, मैं उसे धन देता हूँ।
   पहला देव–तुम उससे मुहरें ले लो।

दूसरा देव–अच्छा, ले लेता हूँ।

7. प्रिये! देखो, मामूली कपड़ा बुनने वाले जुलाहों ने कितना धन-वैभव संचित कर लिया है। ''प्रियतम! विदेश में धनोपार्जन की कल्पना मिथ्या स्वप्न से अधिक नहीं''

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) सोमलिक परिश्रमी था। वह पुनः धन कमाने गया। मैं भी यही करती / करता।

(ख) भाग्य के भरोसे बैठकर धन नहीं कमा सकते। इसलिए सोमलिक परिश्रम करता रहा।

पाठ 7. हे सूरज इतना याद रहे

- **पाठ उद्देश्य**–लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए हनुमान की सूर्य से प्रार्थना और चेतावनी की कथा से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–हे सूरज, इतना याद रखना कि सूर्य वंश पर संकट आया है। लंका के बीच राहु रूपी मेघनाद ने सूर्यवंशी पर आघात किया है। मैं जब तक यह जड़ी वहाँ तक न पहुँचा दूँ तब तक उदित मत होना। मैं जब तक संकट रूपी निशा को दूर न कर दूँ, हे दिनकर तब तक प्रकट मत होना। मेरे पहुँचने से पहले यदि किरणों का प्रकाश हो गया तो हे सूर्यदेव, तब सूर्य वंश में अंधकार छा जाएगा। आशा है आप मेरी यह छोटी-सी प्रार्थना स्वीकार कर लोगे। प्रार्थना करने वाले की कष्ट भरी स्थिति को देखकर अपनी करुणा दृष्टि डालोगे नहीं तो हे दिनकर, मुझे क्षमा करना, अन्यथा आप जानते हैं आपका मुकाबला माता अंजनी के पुत्र से होगा। आप जानते ही हैं मैं बचपन से कैसा मतवाला हूँ। आपको फिर से मुख में रख लूँगा। आप तब मेरे बंधन से मुक्त होंगे जब लक्ष्मण के दुःख दूर हो जाएँगे।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) इसमें हनुमान सूर्य से लक्ष्मण के संकट के बारे में बात कर रहे हैं।
   (ख) सूर्य को तब तक छिपे रहने के लिए कहा है जब तक लक्ष्मण संकट से निकल नहीं जाते।
   (ग) हनुमान जी को आशा है कि दिनकर उनका अनुरोध स्वीकार कर लेंगे।
   (घ) यदि सूर्य ने उनका अनुरोध नहीं माना तो वे सूर्य को निगल जाएँगे।

2. (क) लक्ष्मण सूर्यवंशी थे इसलिए हनुमान ने ऐसा कहा था।
   (ख) इसमें जड़ी के पहुँचाने का चित्र उपस्थित होता है। सूर्योदय न होने का, उनके अस्त रहने का भाव ज्ञात होता है।
   (ग) हनुमान के दयालु, विनम्र और बलशाली होने की विशेषताओं का पता चलता है।

3. (क) दिनकर तुम छिपे रहना।
   (ख) राहु ने लक्ष्मण को आहत किया।
   (ग) हनुमान जी को बहुत दु:ख हुआ।
   (घ) हनुमान ने सूर्य से क्षमा माँगी।
   (ङ) लक्ष्मण को आघात पहुँचा।

4. (क) दिनकर, भास्कर (ख) मुसीबत, कष्ट
   (ग) ईश्वर, परमात्मा (घ) निवेदन,अर्चना
   (ङ) महावीर, केसरीनंदन।

5. (क) स्त्रीलिंग (ख) स्त्रीलिंग
   (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिंग
   (ङ) स्त्रीलिंग।

6. (क) मैं जब तक यह जड़ी न पहुँचा दूँ, रात्रि रूपी संकट को मिटा न दूँ तब तक उदित मत होना।

(ख) मेरे पहुँचने से पहले यदि किरणों का प्रकाश हो गया तो हे सूर्यदेव सूर्यवंश में अंधकार छा जाएगा।

7. पहुँचा दूँ–मिटा दूँ चमत्कार–अंधकार

स्वीकारोगे–निहारोगे पाला–मतवाला।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) शक्तिशाली व्यक्ति यदि विनम्र होता है तो यह उसकी सबसे बड़ी विशेषता होती है। अन्यथा शक्ति पाकर व्यक्ति अंहकारी हो जाता है। मैं इससे सहमत हूँ।

(ख) बाल्यकाल में भूख लगने पर हनुमान जी ने सूर्य को फल समझकर निगल लिया था। इस पंक्ति में इस घटना का उल्लेख किया गया है।

पाठ 8. अब्दुल हमीद

◆ **पाठ उद्देश्य**–वीर अब्दुल हमीद के जीवन से परिचित कराकर देशभक्ति की भावना भरना।

◆ **पाठ सार**–8 दिसंबर 1965 को भारत पाकिस्तान युद्ध में अब्दुल हमीद ने पाकिस्तान के सात टैंक नष्ट कर दिए थे। उनका नाम परमवीर चक्र के लिए प्रस्तावित किया गया। अंत में एक पाकिस्तानी सैनिक के हाथों वे वीरगति को प्राप्त हो गए। उनका जन्म 1 जुलाई 1933 को गाजीपुर में हुआ था। उनके पिता मोहम्मद उस्मान दर्ज़ी थे। उन्होंनें पाँचवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। वे 27 दिसंबर 1954 को भारतीय सेना में चले गए। उन्होंने सन् 1965 के युद्ध होने पर वे छुट्टी पर थे। उन्हें वापस बुला लिया गया। उन्होंने घर में किसी को युद्ध की बात नहीं बताई।

8 दिंसबर 1965 को पाकिस्तान के आक्रमण के समय वे पंजाब के खेमकरन सैक्टर में तैनात थे। उन्होंने सात टैंक नष्ट कर डाले। उनकी जीप पर शत्रुओं का गोला आ गिरा। उन्होंने 10 दिंसबर 1965 को वीरगति प्राप्त की। 26 जनवरी 1966 को गणतंत्र-दिवस पर उन्हें मरणोपंरात परमवीर चक्र दिया गया, जिसे उनकी पत्नी रसूलन बीबी ने ग्रहण किया। उनकी स्मृति में 20 सितंबर 1979 और 28 जनवरी 2000 को दो डाक टिकट जारी किए गए।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) अब्दुल हमीद का जन्म एक जुलाई 1933 को गाजीपुर में हुआ था।
   (ख) उनके पिता दर्ज़ी थे।
   (ग) हमीद की दिलचस्पी कुश्ती, लाठी चलाने, गुलेल चलाने और तैरने में थी।
   (घ) उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया और उन पर दो डाक टिकट निकाले गए।
2. (क) उन्होंने गन्ने के खेत में छिपकर पाकिस्तानी टैंको को ध्वस्त किया था।
   (ख) उन्हें पाकिस्तानी टैंक नष्ट करने के लिए 'परमवीर चक्र' दिया गया।
   (ग) शौर्य चक्र और सेना चक्र।
3. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓
   (घ) ✗ (ङ) ✗
4. (क) मोहम्मद उस्मान खलीफ़ा।
   (ख) पढ़ाई (ग) 4 ग्रेनेडीयर रेजिमेंट
   (घ) पत्नी (ङ) 16 सितंबर 1965

5. **तत्सम**–परमवीर, चक्र, दृष्टि, अंतत।

   तद्भव–चार, अधिकारी, माता, सपूत।

   उर्दू–साल, इलाकों, आवाज़, इंतज़ार।

   अंग्रेज़ी–रेंज, टैंक, आर्मी हेडक्वार्टर्स।

6. चिकित्सकीय, अध्यापकीय, मानवीय, नरकीय।

7. (क) हमीद वीर सपूत था।
   (ख) उसने सैनिक प्रशिक्षण लिया।
   (ग) हमीद ने हैसियत से अधिक टैंक नष्ट किए।
   (घ) पाकिस्तान ने हमला किया।
   (ङ) अब्दुल हामिद का किरदार निभाया।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होता है कि मातृभूमि की रक्षा करे। यह हमारा कर्तव्य होता है। अब्दुल हमीद ने शत्रुओं के टैंक नष्ट करके इसे सिद्ध कर दिया था।

(ख) अब्दुल हमीद को मरणोपरांत 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया और उनकी स्मृति में दो डाक टिकट निकाले गए।

पाठ 9. जलाओ दीये

- **पाठ उद्देश्य**–दीपकों के प्रकाश से महत्वपूर्ण है प्रत्येक व्यक्ति का दीपक के समान बन जाना, इस भाव से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–दीये अवश्य जलाओ पर ध्यान रहे कि धरती पर कहीं भी अँधेरा न रह जाए। नई ज्योति झिलमिलाते पंखों के साथ उड़े और मृत्यु लोक की मिट्टी आकाश में उड़कर स्वर्ग को छू ले। रोशनी ऐसे झूमे कि रात की गलियों में अँधेरे रास्ता भूल जाएँ।

मुक्ति की किरणों का वह द्वार जगमगा जाए जिससे सुबह जा न सके और रात आ न सके। यदि विश्व में किसी भी घर में उदासी छाई हुई है तो निर्माण अधूरा है। जब तक धरती पर युद्ध होंगे भूमि रक्त की प्यासी रहेगी तब तक मानवता अपूर्ण रहेगी। दीवाली का त्योहार चाहे प्रतिदिन आए, नाश का यह खेल तब तक चलता रहेगा।

केवल दीपक के प्रकाश से धरती का अँधेरा नहीं मिट पाया है। नयनों के समस्त नक्षत्र चाहे उतर आएँ, वे भी हृद्य में प्रकाश नहीं कर सकेंगे। जिन अँधेरों ने हमें घेर रखा है वे तब दूर होंगे, जब मनुष्य स्वयं दीपक बनेंगे।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कवि चाहता है कि धरती पर कहीं भी अँधेरा न रह जाए।
   (ख) धरती जब तक रक्त की प्यासी रहेगी, तब तक मनुष्यता अपूर्ण रहेगी।
   (ग) हृदय में उजाला तब होगा जब प्रत्येक मनुष्य दीपक बन जाएगा।
   (घ) गोपाल दास नीरज।
2. (क) ऐसा प्रकाश हो कि रात की गली में अँधेरे रास्ता भूल जाएँ अर्थात् अँधेरी रातें भी प्रकाश से जगमगा जाएँ।
   (ख) दीपावली प्रकाशोत्सव है। हम घरों में प्रसन्नताएँ लाने के लिए उन्हें रोशनी से जगमगा देते हैं।
   (ग) कवि ने धरती से अंधकार दूर कर ज्ञान के प्रकाश की बात की है।
3. सिर्फ़ जग में, नहीं मिट सका है, आएँ नखत सब नयन के, नहीं कर सकेंगे हृदय, अँधेरे घिरे अब, दीप का रूप आए।
4. पाठ सार देखें।

5. (क) निशा, रात्रि (ख) धरा, भूमि
(ग) सुबह, प्रातः (घ) अंधकार, तिमिर
(ङ) संसार, जग।

6. (क) विश्व को रोशनी से भर दो।
(ख) प्रकाश करने का ध्यान रहे।
(ग) दीवाली प्रकाश–उत्सव है।
(घ) स्वयं दीपक बनकर प्रकाश करें।
(च) धरा को जगमगाओ।

7. धरा–धरती ज्योति–जोत
मर्त्य–मृतक तिमिर–अँधेरा

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) धरती का अंधकार दीपकों से दूर नहीं होगा। इसके लिए प्रत्येक मनुष्य को प्रयास करना पड़ेगा।

(ख) अज्ञानता दूर करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को दीपक के समान ज्ञान का प्रकाश देना पड़ेगा। मैं इससे सहमत हूँ।

पाठ 10. डॉ० होमी जहाँगीर भाभा

◆ **पाठ उद्देश्य**–डॉ० होमी जहाँगीर भाभा के जीवन और कार्यों से परिचित कराना।

◆ **पाठ सार**–डॉ० होमी जहाँगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर 1909 को मुंबई में हुआ था। उनके पिता जे. एच. भाभा वकील थे। उनकी आंरभिक शिक्षा जॉन केनल विद्यालय में हुई। उनकी उच्च शिक्षा एलिफ़िंस्टन कॉलेज और रॉयल इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस कॉलेज में हुई। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच०डी० की। वे टाटा वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान के निदेशक और बाद में रिसर्च संस्थान बंबई के निदेशक बने। उन्होंने 1947 में आज़ादी के बाद

परमाणु शक्ति आयोग स्थापित किया। सन् 1955 में परमाणु शक्ति केंद्र की स्थापना की। वे उनकी संगीत, चित्रकारी, और धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में रुचि थी। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा मंत्री पद का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे अपने कार्य और देश सेवा में लगे रहना चाहते थे। 24 जनवरी 1966 को विमान दुर्घटना में उनका निधन हो गया।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) डॉ० होमी जहाँगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर 1909 को मुंबई में हुआ।
   (ख) उनकी प्रारंभिक शिक्षा जॉन केनन विद्यालय में हुई।
   (ग) उनके पिता का नाम जे० एच० भाभा था।
   (घ) उन्हें सन् 1942 में कैंब्रिज विश्वविद्यालय ने एडम्स पुरस्कार से सम्मानित किया।
2. (क) उनकी रुचि संगीत, चित्रकारी और धार्मिक पुस्तकें पढ़ने में थी।
   (ख) उनका निधन 24 जनवरी 1968 को विमान दुर्घटना में हुआ।
   (ग) वे परमाणु शक्ति आयोग के अध्यक्ष थे।
3. (क) भारत समृद्ध देश है।
   (ख) उनकी चित्रकारी में रुचि थी।
   (ग) भाभा संगीत सुनते थे।
   (घ) भाभा परमाणु वैज्ञानिक थे।
   (ङ) भाभा को एडम्स पुरस्कार मिला।
4. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗
   (घ) ✓ (ङ) ✓

5. (क) यूरोप (ख) चित्रकारी
(ग) निदेशक (घ) वायुयान दुर्घटना
(ङ) ऋणी।

6. विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

7. (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग
(ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग
(ङ) पुल्लिंग।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) उसके जीवन और कार्यों से सबंधित प्रश्न लिखकर साक्षात्कार लेंगे।

(ख) यह कथन सत्य है क्योंकि उन्होंने ही भारत में परमाणु शक्ति के कार्य आरंभ किए।

पाठ 11. छठ पूजा

- **पाठ उद्देश्य**–छठ पूजा का महत्व और विधि से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–छठ डूबते सूरज को अर्घ्य देने का पर्व है। इसमें छठ माता और सूर्य की पूजा की जाती है। भगवान राम और माता सीता ने रामराज्य की स्थापना के लिए कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष में षष्ठी के दिन व्रत रखा था। तबसे इसका आरंभ माना जाता है। यह पर्व चार दिन चलता है। पहला दिन 'नहाय खाय' होता है। नदियों में स्नान किया जाता है। रात को चने की दाल, लौकी की सब्ज़ी, रोटी खाते हैं। इस दिन नमक नहीं खाते दूसरे दिन 'खरना' होता है। इस दिन गुड़ की खीर बनती है। इसके बाद निर्जला व्रत होता है। इस दिन महिलाएँ लोकगीत गाती हैं। तीसरे दिन छठ घाट पर जाते हैं। पुरुष सिर पर फलों से भरी डलिया लेकर चलते हैं। घाट

पर सूर्य को दूध और जल से अर्घ्य देते हैं। अंतिम दिन घाट पर सूर्योदय को अर्घ्य देकर 'ठेकुआ' प्रसाद बाँटा जाता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) छठ पर्व पर डूबते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है, इसलिए यह सबसे भिन्न पर्व है।
   (ख) वर्तमान में यह पूरे भारत, मॉरीशस और नेपाल में भी मनाया जाता है।
   (ग) राम राज्य की स्थापना हेतु भगवान राम और माता सीता ने कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष को षष्ठी के दिन व्रत रखा था। यह सबसे प्रचलित मान्यता है।
   (घ) दूसरे दिन 'खरना' होता है। जिसमें गुड़ की खीर का प्रसाद बाँटकर शाम से निर्जला व्रत रखा जाता है।
2. (क) छठ माता और सूर्य की पूजा की जाती है।
   (ख) चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को मनाते हैं।
   (ग) पहले दिन 'नहाय खाय' में नदियों में स्नान करके चने की दाल, लौकी की सब्ज़ी, रोटी खाते हैं। दूसरे दिन 'खरना' में गुड़ की खीर का प्रसाद बनता है और निर्जला व्रत शुरू होता है। तीसरे दिन घाट पर जाकर सूर्य को अर्घ्य देते हैं। चौथे दिन सूर्योदय पर सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और ठेकुआ प्रसाद बाँटा जाता है।
3. (क) भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है।
   (ख) खीर का प्रसाद बाँटा जाता है।
   (ग) निर्जला व्रत रखा जाता है।
   (घ) सूरज की पूजा होती है।
   (ङ) मुराद माँगी जाती है।

4. (क) छठ माता, सूर्य (ख) दो बार
(ग) लोक मान्यता (घ)खरना
(ङ) बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश।

5. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✓

6. (क) गृह, आवास (ख) सूर्य, दिनकर
(ग) ईश्वर, परमात्मा (घ) कामना, मनोरथ
(ङ) जग, विश्व।

7. (क) इच्छाएँ (ख) परंपराएँ
(ग) डालियाँ (घ) मुरादें
(ङ) बच्चे।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) छठ पूजा का पर्व आत्मीयता और भाईचारे का संदेश देता है। यह प्रकृति के साथ जुड़ने का पर्व है। नदियों और सूर्य के साथ संबध बनाने और भारतीय परंपराओं को जीवंत रखने का संदेश देता है।

(ख) हिंदू धर्म के अनुसार सूर्य, चन्द्र को अर्घ्य देना उचित ही नहीं अपितु श्रद्धा और निष्ठासूचक है।

पाठ 12. अकबर बीरबल

◆ **पाठ उद्देश्य**–बीरबल की चतुराई से परिचित कराना और मनोरंजन कराना।

◆ **पाठ सार**–अकबर का दरबारी ख्वाज़ा सदा स्वयं को बुद्धिमान और बीरबल को मूर्ख समझता था। उसने अकबर से कहा कि मैं बीरबल से कुछ प्रश्न पूछकर सिद्ध कर दूँगा कि उनमें योग्यता

नहीं है। यह कहकर उसने अकबर को एक पर्ची पकड़ा दी। अकबर ने पर्ची पढ़कर बीरबल से पहला प्रश्न पूछा ''धरती का बीच (केंद्र) कहाँ है?'' बीरबल ने तीन कदम चलकर कहाँ, यहाँ है। यदि ख्वाज़ा को यकीन नहीं है तो स्वयं नाप लें। अकबर ने दूसरा प्रश्न पूछा ''संसार में कितने लोग हैं?'' बीरबल ने कहा कि संसार की जनसंख्या घटती-बढ़ती रहती है। यदि संसार के तमाम लोगों को यहाँ खड़ा कर दें तो मैं बता दूँगा। अकबर ने तीसरा प्रश्न पूछा, ''आसमान में कितने तारे हैं?'' बीरबल ने कहा, ''ख्वाज़ा के सिर पर जितने बाल हैं, आसमान में उतने ही तारें हैं। ख्वाज़ा का सिर मुँडवाकर बाल गिन लिए जाएँ।'' यह सुनकर सब हँसने लगे और ख्वाज़ा शर्मिंदा हो गया। वह दरबार से चला गया।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) बीरबल अकबर के नौ रत्नों में से एक था। उसकी बुद्धिमानी और हाज़िर जवाबी के कारण अकबर उससे प्रसन्न रहता था।
   (ख) उसने बीरबल से तीन प्रश्न पूछे।
   (ग) ख्वाज़ा का अंतिम प्रश्न था कि आसमान में कितने तारे हैं। बीरबल ने उत्तर दिया कि जितने ख्वाज़ा के सिर में बाल हैं।
   (ग) ख्वाज़ा लज्जित होकर दरबार से चला गया।
2. (क) ख्वाज़ा अकबर का दरबारी था।
   (ख) वह बीरबल को मूर्ख समझता था।
   (ग) उसने बीरबल से तीन प्रश्न पूछकर बीरबल की मूर्खता सिद्ध करनी चाही परंतु बीरबल ने अपने उत्तरों से उसे लज्जित कर दिया।

(घ) ख्वाज़ा का प्रश्न था कि धारती का केंद्र कहाँ है? बीरबल ने तीन कदम चलकर कहा, यहाँ है।

3. (क) नौ (ख) बीरबल
   (ग) मूर्ख (घ) तीन
   (ङ) प्रंशसा।

4. (क) बीरबल ने चतुराई से ख्वाज़ा को हरा दिया।
   (ख) बीरबल ने अकबर का अभिवादन किया।
   (ग) अकबर को बीरबल पर भरोसा था।
   (घ) ख्वाज़ा ने मुश्किल प्रश्न पूछे।
   (ङ) सबने बीरबल की प्रशंसा की।

5. (क) ✓ (ख) ✓
   (ग) ✗ (घ) ✗

6. (क) ख्वाज़ा ने अकबर से कहा।
   (ख) अकबर ने बीरबल कसे कहा।
   (ग) ख्वाज़ा ने बीरबल से कहा।

7. (क) जाएँगे, बाँधते, पाएँ, कहाँ, जहाँपनाह।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) यदि मैं बीरबल होता तो मैं भी वही उत्तर देता जो बीरबल ने दिए थे क्योंकि तीनों उत्तर बुद्धिमानी से सटीक दिए गए हैं।

(ख) बीरबल में धैर्य था। वह घबराता नहीं था। इससे विषम स्थिति सदूर हो जाती थी। इसी प्रकार कार्य करना चाहिए।

पाठ 13. कृष्ण की चेतावनी

- **पाठ उद्देश्य**–श्री कृष्ण द्वारा कौरवों-पांडवों के बीच शांति स्थापित करने से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–पांडव वनों में वर्षों तक धूप-गरमी, वर्षा और चट्टानों की बाधाओं को सहकर और निखर आए। सौभाग्य के दिन सदा नहीं रहते। आगे क्या होगा, देखते हैं। सबको मित्रता का मार्ग बताने के लिए, ठीक रास्ते पर लाने के लिए, दुर्योधन को समझाने के लिए, भयंकर विनाश बचाने के लिए भगवान श्री कृष्ण पांडवों का संदेश लेकर हस्तिनापुर आए।

  उन्होंने दुर्योधन के समक्ष प्रस्ताव रखा कि यदि न्याय करना है तो पांडवों को आधा राज्य दे दो। इसमें बाधा है तो केवल पाँच गाँव ही दे दो। अपना बाकी राज्य अपने पास रख लो, हम वहीं प्रसन्नता से जी लेंगे, परंतु संबंधियों पर तलवार नही उठाएँगे।

  दुर्योधन पाँच गाँव भी न दे सका। समाज की प्रशंसा न ले सका। वह श्रीकृष्ण को ही बंदी बनाने लगा। जो असंभव था, उसे करने चला था। मनुष्य का जब नाश होने वाला होता है तो पहले उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है।

  श्री कृष्ण ने पहले हुंकार भरी, फिर अपने विशाल रूप में आए। चारों दिशाएँ डोलने लगीं। भगवान क्रुदध होकर बोले, ''दुर्योधन, जंज़ीर बढ़ाकर मुझे बाँध लो। यह देखो यह सारा आकाश और पवन मुझमें समाहित है, मुझमें समस्त जीवन और संसार विलीन हैं। मुझमें अमरत्व फलता-फूलता है और मुझमें ही संहार समाहित है।

  मेरे मस्तक पर उदयाचल जगमगा रहा है, सारा भूमंडल मेरा वक्षस्थल है, मेरी भुजाओं ने दिशाओं को बाँध रखा है, मैनाक पर्वत मेरे चरण हैं। यह ग्रह-नक्षत्रों का समूह सब मेरे मुख में हैं।

यदि तुम्हारे पास आँखें हैं तो इस विस्तृत दृश्य को देखो। मुझमें सारे ब्रह्मांड को देखो। जीव-निर्जीव, संसार, मरने वाले मनुष्य और अमर रहने वाले देवता मुझमें हैं। सैंकड़ों-करोड़ों सूर्य, सैंकड़ों-करोड़ों चंद्र, सैंकड़ों-करोड़ों नदियाँ, सरोवर, समुद्र मेरे भीतर हैं।

सैंकड़ों-करोड़ों विष्णु, ब्रह्मा, महेश, विजेता, जलपति, धनपति, सैंकड़ों-करोड़ों रुद्र, सैंकड़ों-करोड़ों काल, सैंकड़ों-करोड़ों दंडित करते लोकपाल; दुर्योधन जंज़ीर बढ़ाकर इन सबको बाँधकर दिखाओ।

भूलोक, अतल लोक, पाताल लोक को देखो, भूत और भविष्य काल को देखो; सृष्टि के आरंभ और अंत को देखो। इस महाभारत के रण को देखो, मृतकों से भरी भूमि को देखो। पहचानो, तुम इनमें से कहाँ हो?

आकाश में कुंतल-जाल देखो, पाँव के नीचे के पाताल को देखो, मुट्ठी में तीन कालों को देखो, मेरे इस भयंकर रूप को देखो। सब मुझसे जन्म पाते हैं और फिर मुझमें लौट आते हैं।

मेरा जिह्वा से निकली ज्वाला को देखो, साँसों से निकलते पावन को देखो। मेरी दृष्टि जिधर पड़ जाती है सारी सृष्टि उधर ही हँसने लगती है। मैं जब नेत्र बंद कर लेता हूँ तब चारों ओर मरण छा जाता है।

तुम मुझे बाँधने आए हो। क्या बड़ी जंज़ीर लाए हो? यदि मुझे बाँधने की इच्छा है तो पहले अनंत आकाश को बाँधो जो सूने को नहीं साध सकता, क्या वह मुझे बाँध सकता है?

तुमने अपने भलाई की बातों को नहीं माना और मैत्री के मूल्य को नहीं पहचाना मैं अब जा रहा हूँ। अपना अंतिम संकल्प बताता हूँ। अब याचना नहीं होगी अपितु युद्ध होगा। जीवन जीतेगा या मृत्यु होगी।

नक्षत्र समूह टकराएँगे, धरती पर आग बरसेगी। शेषनाग का फन डोलेगा। मृत्य का भयंकर मुँह खुलेगा। हे दुर्योधन! ऐसा युद्ध होगा जैसा भविष्य में कभी नहीं होगा।

भाई, भाई को मारेगा, बाणों से विष की बूँदें छूटेंगी। गीध और सियार आनंदित होंगे और मनुष्यों के भाग्य फूट जाएँगे। अंत में तुम मारे जाओगे, तुम हिंसा के उत्तरदायी होगे।

सारी सभा स्तब्ध रह गई। सब भयभीत थे, खामोश थे या बेहोश थे। केवल धृतराष्ट्र और विदुर ही प्रसन्न थे। वे प्रसन्न होकर हाथ जोड़कर खड़े थे। दोनों निडर होकर जय श्री कृष्ण की जय-जयकार कर रहे थे।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) धृतराष्ट्र और विदुर।
   (ख) युधिष्ठिर जुए में हार गए थे। शर्त के अनुसार पांडवों को वनों में रहना था।
   (ग) महाभारत के युद्ध में सारे कौरव मारे गए थे। पांडवों को राज्य मिल गया। उनके सुख के दिन आ गए।
   (घ) उन्होंने भयंकर युद्ध होने की चेतावनी दी जिसमें दुर्योधन मारा जाएगा।
2. (क) श्री कृष्ण ने कहा कि पांडवों को आधा राज्य दे दो। यदि नहीं दे सकते तो पाँच गाँव ही दे दो।
   (ख) श्री कृष्ण भगवान थे। उन्हें बंदी बनाना असंभव था।
   (ग) श्री कृष्ण ने दुर्योधन से कहा कि न्याय के अनुसार पांडवों का आधे राज्य पर अधिकार है। इसलिए उन्हें आधा राज्य दे दो।
3. सुमार्ग पर लाने को; दुर्योधन को; बचाने को; भगवान; तो आधा

दो; पर, इसमें भी; केवल पाँच ग्राम; रक्खो अपनी; खुशी से खाएँगे।

4. (क) पांडव वन में रहे।
   (ख) युद्ध में पत्थर बरसेंगे।
   (ग) विनाश से पूर्व विवेक नष्ट हो जाता है।
   (ङ) धृतराष्ट्र और विदुर निर्भय थे।

5. (क) ईश्वर, प्रभु, नयन, परमात्मा।
   (ख) भूमि, भू, धरा (ग) पवन, वायु, अनिल
   (घ) नेत्र, नयन, चक्षु (ङ) नभ, गगन, आसमान।

6. श्री कृष्ण का विराट स्वरूप देखकर सभा में बैठै लोग स्तब्ध रह गए। कुछ बेहोश हो गए। चारों ओर सन्नाटा छा गया।

7. घूम-चूम; आए-लाए; आधा दो-बाधा दो।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) 'मुझमें अमरत्व की वृद्धि होती है और विनाश झूमता रहता है।' इसका तात्पर्य है कि श्रीकृष्ण अमरता प्रदान कर सकते है। तो विनाश भी कर सकते हैं।

(ख) जब व्यक्ति का नाश होने वाला होता है तो उससे पहले उसकी उचित और अनुचित समझने की क्षमता नहीं रहती। दुर्योधन की बुद्धि नष्ट हो गई थी।

पाठ 14. पिता के पत्र पुत्री के नाम

◆ **पाठ उद्देश्य**–जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखे पत्र के भावों से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–जवाहर लाल नेहरू अपनी पुत्री को पत्र लिखकर बता रहे हैं। तुमने संसार को जानना है तो केवल अपनी मातृभूमि के

बारे में ही नहीं दुनिया के बारे में जानना चाहिए। बड़ी हो जाने पर तुम्हें पुस्तकों में अन्य देशों के बारे में जानकर आनंद आएगा। यह धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है। आदमियों से पहले यहाँ जानवर रहते थे। उससे पहले कुछ भी न था। तब धरती बहुत गर्म भी थी। अब पुराने ज़माने में किताबें नहीं थी जिसमें उस युग के बारे में मिल जाती परंतु पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, जानवरों की हड्डियों आदि से उस युग की कहानी जान सकोगी। चट्टान का टुकड़ा गोल, नुकीला कैसे हो गया, उन्हें देखकर तुम जान सकोगी। चट्टान का टुकड़ा पड़ा था। तब पानी आया। उसे बहाकर ले गया। वह नाले से बहकर नदी में पहुँचा, वहाँ से बड़ी नदी में पहुँचा। लुढ़कने और बहने से उसके किनारे घिसकर गोल हो गए, वह चिकना और चमकदार हो गया। एक छोटा-सा कंकड़ इतनी बातें बता सकता है तो पहाड़ और दूसरी चीज़ों से बहुत कुछ पता चल सकता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) यह पत्र जवाहर लाल नेहरू ने अपनी पुत्री इंदिरा को तब लिखा था जब वे इलाहाबाद में थे।
   (ख) दुनिया का हाल जानने के लिए अपने देश के बारे में ही नहीं दुनिया के बारे में जानना चाहिए।
   (ग) पहले धरती गर्म थी तब यहाँ कोई नहीं रहता था। फिर जानवर रहने लगे। धीरे-धीरे धरती का रूप बदला और उसमें मनुष्य रहने लगे।
   (घ) चट्टान का टुकड़ा पानी में बहकर रोड़ा बना। वह नाले से छोटी नदी में और फिर बड़ी नदी में पहुँचा उसके किनारे घिसकर गोल हो गए। वह चमकदार हो गया।
2. (क) तब लेखन नहीं होता था।

(ख) जब किताबें नहीं थीं तो उस ज़माने के बारे में जानने के लिए पहाड़ों, समुद्रों, नदियों और सितारों से समझा जा सकता है। जवाहर लाल नेहरू ने पुत्री को समझाया था।

(ग) यदि दरिया कंकड़ को आगे ले जाता तो वह छोटा होकर समुद्र के किनारे बालू का किनारा बन जाता।

3. लाखों, करोड़ों; इतिहास; अक्षर; खुरदुरा; नुकीला; लुढ़कता।

4. छोटी-छोटी; कभी-कभी; मोटी-मोटी; बैठे-बैठे।

5. (क) दुनिया बहुत बड़ी है।
   (ख) हम मुश्किल में पड़ जाएँगे।
   (ग) पुराने ज़माने को जानने का तरीका खोज सकते हैं।
   (घ) रोड़ा चमकीला हो गया।
   (ङ) रोड़ा बड़े दरिया में पहुँचा।

6. (i) लेकिन पुराने ज़माने में तो आदमी पैदा ही नहीं हुआ था; किताबें कौन लिखता?
   (ii) तब हमें उस ज़माने की बातें कैसे मालूम हों?
   (iii) लेकिन जो कहानी किसी बात को देखे बिना ही गढ़ ली जाए वह ठीक कैसे हो सकती है?

7. छोटी-छोटी, छोटा-सा, बड़ा, थोड़ी, बड़ी, मोटी आदि।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) हम उन्हें वर्तमान युग के नए-नए आविष्कारों का परिचय देते और बताते कि हमारा युग उनके युग से एकदम बदल चुका है।

(ख) पत्र में अतीत काल के विषय में अच्छी तरह समझाया गया है। रोड़े का उदाहरण रोचक है।

पाठ 15. नर हो, न निराश करो मन को

- **पाठ उद्देश्य**–मनुष्य को निराश नहीं होना चाहिए, कार्यशील रहना चाहिए। इससे अवगत कराना।
- **पाठ सार**–तुम मनुष्य हो इसलिए अपने मन में निराशा के भाव मत लाओ कुछ काम करके संसार में अपना नाम करो। इस जन्म को व्यर्थ मत करो, कुछ भी हो अपने शरीर का उचित उपयोग करो।

  यह सुअवसर चला न जाए, इसलिए संभल जाओ। अच्छे उपाय व्यर्थ नहीं जाते। संसार केवल सपना नहीं है, यहाँ रहकर अपना मार्ग स्वयं बनाओ। हमारे सहारे भगवान हैं।

  जब तुम्हें यहाँ सब कुछ उपलब्ध है तो तुम इनसे दूर कहाँ चले जाआगे? तुम अपने श्रेष्ठ कार्यों रूपी अमृत का पान करो। उठो और अमरता बन अमरता के नए नियम लिखो। इस संसार रूपी वन में तुम चिंगारी के रूप में फैल जाओ।

  तुम मानव हो। तुम्हें गौरव का ध्यान रखना चाहिए। स्वयं पर विश्वास करो, यह ध्यान रखो कि मृत्यु के पश्चात् भी तुम्हारे कार्य रूपी गीत गूँजते रहें। सब कुछ समाप्त हो जाए परंतु सम्मान का मत जाने दो। अपने साधनों को कार्यों को मत त्यागो।

  भगवान ने तुम्हें समस्त वस्तुएँ-साधन दिए हैं। तुम उनका उपयोग करो। कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं है इसलिए उसे पा लो।

  तुम कौन-सा गौरव नहीं पा सकते? तुम किन सुखों का भोग नहीं कर सकते? तुम भी भगवान की संतान हो। उसके लिए सब लोग उसके परिवार के सदस्य हैं। इसलिए मनुष्य के लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

  अपने भाग्य को दोष मत दो। अपने लक्ष्य को पाने के लिए चेष्टारत रहो। इससे सब सुख मिलते हैं। आलस्य भरा निष्क्रिय जीवन धिक्कारने योग्य है। नर हो इसलिए कुछ काम करो, निराश मत हो जाओ।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) कवि समझाना चाहता है कि उसे निराश नहीं कर्मशील होना चाहिए।
   (ख) कवि ने भगवान का सहारा लेने के लिए कहा है।
   (ग) इसका अर्थ है तुम मनुष्य हो इसलिए अपने मन में निराशा के भाव मत लाओ।
   (घ) यह जो जन्म मिला है उसे व्यर्य मत गँवाकर इस शरीर से उपयुक्त कार्य करो।
2. (क) संसार सपना नहीं यथार्थ है इसलिए यहाँ अपनी पहचान बताओ, अपना मार्ग बनाओ।
   (ख) हमें अपने गौरव का ज्ञान होना चाहिए। अपनी संस्कृति से परिचित होना चाहिए। स्वयं पर गर्व करना चाहिए।
   (ग) वह श्रेष्ठ कार्य करके स्वयं को अमर कर सकता है। उसे स्वयं ऐसे मार्ग को तैयार करना चाहिए जिससे वह अमर हो जाए।
3. नित ज्ञान रहे; हम भी कुछ हैं; गान रहे; सब जाए अभी; तुम योग्य नहीं; कब कौन तुम्हें; भी जगदीश्वर के; क्या उसके जन को।
4. (क) जीवन व्यर्थ मत करो।
   (ख) जीवन में उपयुक्त कार्य करो।
   (ग) श्रेष्ठ कार्य सफलता के साधन होते हैं।
   (घ) मन को निराश मत करो।
   (ङ) निरंतर आगे बढ़ो।
5. (क) मत ✓ (ख) प्रशस्त ✓
   (ग) अमृत ✓ (घ) कर्म की ✓
   (ङ) अपने काम से ✓

6. (क) पुल्लिंग (ख) पुल्लिंग
(ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिंग
(ङ) पुल्लिंग

7. (ख) कहाँ (ग) भला
(घ) अपना (ङ) सत्व
(च) मन (छ) ध्यान
(ज) गान।

8. (क) पाठ सार देखें।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(ख) कवि ने समझाया है कि मनुष्य को मन में निराशा का भाव नहीं लाना चाहिए। श्रेष्ठ कार्य करके अपनी पहचान बनानी चाहिए। स्वयं पर गर्व करना चाहिए।

(ख) संसार सपना नहीं यथार्थ है। यहाँ काम करके अपना मार्ग बनाना चाहिए।

पाठ 16. बिस्मिल्लाह खाँ

◆ **पाठ उद्देश्य**–बिस्मिल्लाह खाँ के जीवन और उपलब्धियों से परिचित कराना।

◆ **पाठ सार**–बिस्मिल्लाह खाँ का जन्म बिहार के डुमराँव में 21 मार्च 1916 को हुआ था। उनके पिता का नाम पैंगबर खाँ और माता का नाम मिट्ठन बाई था। उनके पिता डुमराँव के महाराजा केशव प्रसाद सिंह के दरबार में शहनाई बजाते थे। उनके जन्म के समय उनके दादा के मुख से 'बिस्मिल्लाह' शब्द निकल गया, उनका यही नाम रखा गया। उनका दूसरा नाम कमरुद्दीन भी था। वे मामा अलीबक्श के पास बनारस में रहकर उनसे शहनाई वादन सीखते रहे। उनका विवाह मुग्गन खानम से हुआ। उनके संयुक्त

परिवार में 66 सदस्य थे। वे हिंदू-मुस्लिम संस्कृति को आगे ले जाने वालों में से थे। मुसलमान होकर भी वे देवी सरस्वती को मानते थे। वे विश्वनाथ मंदिर में शहनाई वादन करते थे। अमेरिकी सरकार ने उन्हें अमेरिका में बसने का निमंत्रण दिया। उन्होंने निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। देश की स्वतंत्रता की पूर्व संध्या के अवसर पर उन्होंने दिल्ली आकर प्रधानमंत्री के कहने पर शहनाई वादन किया। उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पदम् श्री, पद्म विभूषण, तानसेन पुरस्कार और भारत रत्न सम्मान मिले। उनका निधन 21 अगस्त 2006 को हुआ।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) उनका जन्म 21 मार्च 1916 को बिहार के डुमराँव में हुआ था।
   (ख) उनके जन्म के समय उनके दादा जी मुख से 'बिस्मिल्लाह' शब्द निकला और उनका यही नाम रख दिया गया।
   (ग) उनके पिता का नाम पैंगबर खाँ था। वे डुमराँव के महाराजा केशव प्रसाद सिंह के दरबार में शहनाई बजाते थे।
   (घ) उनके मामा अलीबख्श ने उन्हें शहनाई वादन की शिक्षा दी।
2. (क) बिस्मिल्ला खाँ ने अमेरिकी सरकार को उत्तर दिया कि यदि वे बनारस, गंगा नदी और बाला जी मंदिर आदि को अमेरिका ले आएँ तो वे अमेरिका आ जाएँगे।
   (ख) उन्हें भारत रत्न, पद्म विभूषण, पद्मश्री, साहित्य नाटक अकादमी पुरस्कार, तानसेन पुरस्कार मिले।
3. (क) बिस्मिल्लाह खाँ प्रसिद्ध शहनाई वादक थे।
   (ख) उन्हें शहनाई वादन विरासत से मिला।
   (ग) गंगा के किनारे वाराणसी बसा है।

(घ) उन्हें अनेक पुरस्कार मिले।

(ङ) संगीत भारत की आत्मा है।

4. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✗ (ङ) ✓

5. (क) 21, 1916 (ख) विश्वनाथ

(ग) निमंत्रण (घ) पद्मश्री

(ङ) तानसेन पुरस्कार

6. (क) बनारस में रहते उन्हें बनारस से प्यार हो गया था।

(ख) उन्होंने अमेरिका में बसने का निमंत्रण अस्वीकार करके दिखा दिया कि वे भारत से बहुत प्यार करते थे।

7. समाज में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वालों को भारत सरकार सर्वोच्च 'भारत रत्न' सम्मान प्रदान करती है। बिस्मिल्ला खाँ को यह सम्मान 2001 में मिला।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) शहनाई शुभ अवसरों पर बजाई जाती है। 15 अगस्त 1947 की पूर्व संध्या पर उन्होंने इसे दिल्ली में बजाया था। वह देश की आज़ादी का अवसर था, इसलिए ऐतिहासिक था।

(ख) उन्होंने अमेरिका में बसने का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया क्योंकि वे भारत से प्यार करते थे। यदि मुझे यह अवसर मिलता तो मैं भी इसे अस्वीकार कर देता क्योंकि मातृभूमि से अच्छा कोई देश नहीं होता।

पाठ 17. बसंती हवा

- **पाठ उद्देश्य**–बसंत ऋतु में बहने वाली हवा और प्राकृतिक सौंदर्य से अवगत कराना।
- **पाठ सार**–मैं बसंती हवा हूँ। मेरी बात सुनो, मैं अनोखी हवा हूँ। मैं बहुत बड़ी पागल और मस्त रहने वाली हूँ। मुझे न फ्रिक है, न किसी का डर है। मैं जिधर चाहती हूँ उधर ही घूमती रहती हूँ। मेरा कोई घर नहीं है; न कोई उद्देश्य ही है। मुझे किसी से कोई अपेक्षा नहीं है। मेरा न कोई प्रेमी है न शत्रु ही है।

  मैं शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन स्थानों, हरे खेतों, पोखरों को झुलाते-झुमाते हुए चलती चली गई। मैं महुआ के पेड़ पर चढ़ी। उस पर खूब मस्ती की। फिर नीचे उतरकर आम के पेड़ पर चढ़ी। उसे भी हिलाया। उसके करन में 'कू' करके भाग गई। वहाँ से हरे-भरे खेतों में पहुँची। वहाँ गेहूँ में लहराती रही। मैं कई पहर तक उसमें रही। फिर अलसी के पौधे पर गई। उस पर बालियाँ आ गई थीं। अलसी को भी खूब हिलाया-झुलाया पर उसकी बालियाँ नहीं गिरीं। मैं हार गई इसीलिए सरसों को नहीं हिलाया-झुलाया।

  मुझे देखकर अरहर लजाकर झुक गई। उसे मनाया पर वह न मानी। उसे आ रहे यात्री पर ढकेल दिया। मैं फिर ज़ोर से हँसी। मेरे हँसने से सारी दिशाएँ, लहराते खेत, चमचमाती प्यारी धूप सब हँसे। बसंत ऋतु की हवा में सारी सृष्टि हँसने लगी।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) हवा शरारती है।
   (ख) वह अजीब तरह की हरकतें करती है इसलिए वह खुद को अजीब मुसाफ़िर कहती है।
   (ग) वह शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन स्थान, हरे खेत, पोखर सबको झुलाते हुए आगे बढ़ी।

(घ) हवा के हँसने पर सारी दिशाएँ, खेत, धूप आदि सब हँसे।

2. (क) हवा के चलने से खेतों में लगी फसलें हिलने-झूलने लगती हैं। कवि ने इस हिलने-झूलने-झूमने की तुलना हँसने की है।

(ख) हवा बहुत चंचल है। वह नटखट बालिका के समान है।

(ग) बसंती हवा अद्‌भुत है। हवा अपनी मस्ती में चलने वाली है।

3. कलसी, झुलाया, बनाया, न मानी, दो पहर, घूमती।

4. अनोखी, बड़ी, बड़ी, कुछ, बड़ी।

5. (क) आम को (ख) हरे खेत में

(ग) कलसी (घ) बसंत को

(ङ) आम के।

6. अनोखी – हवा, बड़ी मस्तमौला मुसाफ़िर - अजब

थपाथप – मचाया शीश – कलसी

7. (क) पवन, वायु, अनिल

(ख) मकान, गृह, आवास

(ग) सरिता, सलिला, तरंगिनी

(घ) यात्री, पथिक, पंथी।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) प्रकृति ने जीवों को हवा रूपी अमूल्य उपहार दिया है। वे इसके कारण जीते हैं। यदि हवा न हो तो जीवन ही न बचेगा। इसलिए इसे जीवन का आधार कहा गया है।

(ख) सर्दियों के बाद बसंत ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में हरियाली आती है। पेड़-पौधे पल्लवित-पुष्पित हो जाते हैं। यह आनंददायक ऋतु है।

पाठ 18. गिल्लू गिलहरी

- **पाठ उद्देश्य**–जीवों के प्रति प्रेम का भावना जाग्रत कराना।
- **पाठ सार**–सोनजुही के पौधे पर खिली पीली कली को देखकर लेखिका को गिलहरी का स्मरण हो आता है जिसे उसने पाला-पोसा था। एक दिन लेखिका ने देखा कि गमले और दीवार के बीच गिलहरी का छोटा-सा बच्चा गिरा पड़ा था जिसे कौवे खा जाना चाहते थे। लेखिका ने उसे उठाकर उसके घावों पर मरहम लगाई और उपचार किया। तीन-चार महीनों में वह बड़ा हो गया। उसका नाम 'गिल्लू' रखा गया। गिल्लू दो वर्ष तक लेखिका के यहाँ रहा। वह डलिया में रहता था। लेखिका लिखती तो लेखिका का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह लेखिका के पैर के पास आता और परदे पर चढ़ जाता। लेखिका कभी-कभी उसे लिफ़ाफ़े में बंद करके रखती। वह घटों इसी मुद्रा में लेखिका को देखता रहता। भूख लगने पर वह चिक-चिक करता। जाली काटकर उसके घर से बाहर जाने का रास्ता बना दिया। लेखिका कॉलेज से पढ़ाकर आती तो गिल्लू उसके पास आ जाता। वह लेखिका की थाली के पास बैठकर चावल का एक-एक दाना खाता एक बार मोटर दुर्घटना में चोट लगने पर लेखिका अस्पताल में रही। वह जब लौटी तो उसके तकिये पर आकर वह उसका सिर सहलाता रहता। गर्मियों में वह सुराही पर लेट जाता। दो वर्ष का होने पर वह मर गया। उसे सोनजुही की लता के नीचे गाड़ दिया गया। उसी सोनजुही पर पीली कली खिली तो लेखिका को गिल्लू स्मरण हो आया।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) लेखिका ने गिल्लू को गमले के पास से उठाकर उसके घावों पर मरहम लगाई। उसका उपचार करके बचाया।

(ख) गिल्लू लेखिका के पैर के पास आता फिर परदे पर चढ़ जाता। वह बार-बार ऐसा करके लेखिका का ध्यान आकर्षित करता था।

(ग) गिल्लू का प्रिय खाद्य काजू था। उसे अन्य चीज़ें दी जातीं तो वह उन्हें झूले से नीचे फेंक देता था।

(घ) गिल्लू ने खाना बंद कर दिया। उसकी डलिया से कई काजू मिले थे। वह दुखी रहा।

2. (क) उस दिन उसने कुछ भी न खाया, बाहर भी नहीं गया। रात को वह लेखिका के पास आया। उसके हाथ ठंडे हो चुके थे। हीटर से गर्मी देने पर भी न बचा और प्रातः मर गया।

(ख) गिल्लू को बाहर जाने के लिए खिड़की की जाली को काटकर थोड़ा-सा स्थान बना दिया गया। वह उससे बाहर चला जाता। वह बंदी नहीं रहना चाहता था और बाहर की ओर झाँकता रहा था।

(ग) अन्य किसी पशु-पक्षी ने लेखिका के साथ भोजन नहीं किया था। गिल्लू भोजन की थाली के पास आकर बैठकर एक-एक चावल खाता रहता था। अन्य गतिविधियों के कारण भी वह सबसे अलग था।

3. (क) सोनजुही (ख) काकपुराण
(ग) व्यक्तिवाचक (घ) चिक-चिक
(ङ) कीलें, जाली

4. (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिंग
(ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिंग
(ङ) स्त्रीलिंग

5. (क) लेखिका ने अचानक गिलहरी के बच्चे को देखा।
(ख) कौवे कर्कश स्वर में बोलते थे।
(ग) लेखिका की दृष्टि गिल्लू पर पड़ी।
(घ) लेखिका कुछ दिन अस्पताल रही।
(ङ) गिलहरी का जीवन दो वर्ष का होता है।

5. (क) प्रांगण, अंगना, अहाता (ख) दिवस, वार, वासर
(ग) मुख, आनन, चेहरा (घ) जल, नीर, वारि
(ङ) प्रातः, भोर, सवेरा (च) पुष्प, सुमन, कुसुम

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) गिल्लू की मृत्यु के पश्चात् खिड़की की जाली के बाहर से नई-नई गिलहरियाँ झाँकती रहती थीं। गिल्लू के साथ ही सब कुछ समाप्त नहीं हो गया था। बसंत के समान जीवन नए रूपों में आता रहता है। सोनजुही पर भी आता रहा। मैं लेखिका के विचारों से सहमत हूँ।

(ख) कौवे को उसके कर्कश स्वर के लिए कोई नहीं चाहता। उसका अनादर किया जाता है परंतु पितृपक्ष में उनका सम्मान किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि हमारे पुरखे कौवों के रूप में आते हैं। उनका आदर किया जाता है। इसी प्रकार एक ही व्यक्ति अपने अवगुणों के कारण अपमानित होता है और श्रेष्ठ कार्य करने पर सम्मान पाता है।

पाठ 19. ये गंगा का किनारा है

- **पाठ उद्देश्य**–गंगा के महत्व से परिचित कराना।
- **पाठ सार**–खिलौने बचपन तक साथ रहते हैं। उत्साह-जोश जवानी तक रहता है। अनुभवों की सारी कहानियाँ बुढ़ापे तक रहती हैं। ज़माने में ये ज़िंदगी भर के सहारे हैं परंतु गंगा का किनारा जीवन के अंतिम पल का सहारा है। गंगा धरती के पापों को दूर करने के लिए प्रकृति की कोख से निकली। सगर के वंशजों का उद्धार करने के लिए और भगीरथ के दीर्घकाल तक किए तप के तेज से धरती पर आई। वह स्वर्गलोक से आई। भगवान शिव ने उसकी ध ारा को अपने शीश पर उतारा है। गंगा शिवालिक पर्वत से उतरकर धरती को धन्य करती हुई हरिद्वार तक आई। वह तपस्या करने वाले श्री राम के चरणों पर उपहार के रूप में चढ़ी। भगवान शिव ने बनारस में इसे पुनः देखा। इसके किनारे पर हमारी चेतना जाग्रत हुई है। इसके किनारे पर आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ-फल आदि उपजते हैं। वेदों में इसके प्रवाहित होने का उल्लेख है। संकल्प करते समय अंजुरी में गंगाजल लिया जाता है। इसे पीकर मनुष्य ने वैकुंठ को पा लिया है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) जवानी तक रवानी रहती है।
   (ख) गंगा जीवन के आखिरी पल का सहारा है।
   (ग) गंगा स्वर्गलोक से शिव की जटाओं से उतरकर पृथ्वी पर उतरी।
   (घ) गंगा के किनारे पर मनुष्य ने गंगाजल का पान करके वैकुंठ प्राप्त किया है।
2. (क) गंगा (ख) गंगा ने
   (ग) भगीरथ और सगर के मुक्ति चाहने वाले वंशजों के कारण गंगा धरती पर उतरी।

3. रवानी बस जवानी तक; सभी अनुभव भरे किस्से; बस ज़िंदगी भर के; मगर ये ज़िंदगी के; ये गंगा का किनारा है; कर हरिद्वार तक आई; हमारी माँ हमारे लोक के; चढ़ीं उपहार तक आई; गले मिल कृष्ण यमुना से; पुनः जी भर निहारा है; ये गंगा का किनारा है।

4. (क) खिलौने बचपन के साथी हैं।
   (ख) गंगा स्वर्गलोक से आई।
   (ग) शिव जी की जटाओं से गंगा धरा पर उतरी।
   (घ) गंगा श्री राम के चरणों पर चढ़ी।
   (ङ) गंगा शिव के शीश पर उतरी।

5. (क) देव, अमर, देवता (ख) पृथ्वी, भूमि, धरा
   (ग) होंठ, श्रेष्ठ, ओष्ठ (घ) विश्व, संसार, जग
   (ङ) भेंट, तोहफ़ा, सौगात।

6. आखिरी–अंतिम शीश–सिर
   धरा–पृथ्वी सुर–देवता
   अधर–होंठ।

7. किनारा है, उतरी, किनारा है, किनारा है, फल।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) गंगा स्वर्गलोक से शिव जी की जटाओं में उतरी। वहाँ से निकलकर हरिद्वार और बनारस से होकर बंगाल की खाड़ी के सुंदर वन के डेल्टा तक जाती है।

(ख) शपथ लेते समय अँजुरी में गंगा जल लिया जाता है इसका अभिप्राय है कि जो शपथ ली जा रही है वह सच्ची है।

पाठ 20. मन का केवल वेग चाहिए पाँव स्वयं ही चल पड़ते हैं।

- **पाठ उद्देश्य**–कर्म करने के लिए प्रेरित करना।
- **पाठ सार**–परिश्रम की भट्ठी में तपकर जनका जीवन तप जाता है, ऐसी वीर बलिदानी मृत्यु से भी लड़ जाते हैं। बाधाएँ साहसी पथिकों को रोक नहीं पातीं। मन में संकल्प होने पर पाँव स्वयं लक्ष्य पाने को चल पड़ते हैं। धरती का निर्माण विध्वंस से नहीं होता। केवल आश्वासन देने से लोगों के कष्ट दूर नहीं होते। इस युग में हिंसा की नहीं परिश्रम करने की ज़रूरत है। मानवता को मिटाने वाले जान लो कि जब क्रांति आती है तो कब्रों से मुर्दे जी उठते हैं। आज अमावस के अंधकार ने चंद्रमा की चाँदनी को बंदी बना लिया है। संध्या भूखे पेट सो गई है। अभाव के कुहासे ने धरती को घेर लिया है। झोंपड़ियों में दीपक बुझे पड़े हैं। सूर्य को दिखाई ही नहीं देता। दीपकों के बुझ जाने से पहले यदि तुम उनमें तेल रूपी स्नेह नहीं दे पाए तो दीपक बुझते-बुझते ज्वाला का रूप ले लेते हैं। जो लोग केवल कागज़ों पर विकास की बातें करते हैं, जो दूसरों के कंधों पर बंदूक चलाते हैं, वे जान लें कि बैसाखी के सहारे कोई देश विकास नहीं कर सकता। मित्रो, कहने में और करने में बहुत अंतर होता है। करने से भाग्य बदलता है। इसके लिए कार्य करने की आवश्यकता होती है। पर्वत शिखरों पर चढ़ने वाले आकश पर भी चढ़ जाते हैं। नया सृजन करने के नाम पर भूचाल रूपी विध्वंस करने वाले पनप रहे हैं। स्थान-स्थान पर विद्रोह हो रहे हैं, बंद किए जाते हैं, हड़तालें होती हैं। शासन अनुशासनहीन हो गया है। जीवन मृत्यु से संघर्ष कर रहा है और इन्हें सिंहासन पर बैठना अच्छा लगता है। माली रूपी राष्ट्रनायक यदि बेसुध रहता है तो सारा चमन रूपी देश उजड़ जाता है। पतझड़ बसंत ऋतु को डस लेता है। फूल खिले बिना ही झड़ जाते हैं जिनके कंधों

पर भारत के। भविष्य का उत्तरदायित्व आने वाला है, वह पीढ़ी दिशाहीन हो गई है। राजनीति के कारण वे अपना कर्तव्य भूल गए हैं। अच्छे और बुरे का अंतर नहीं रह गया है। यह अनहोनी हो रही है। वही देश जीवित रहता है, जिस देश की युवा पीढ़ी जीवंत होती है। जिस देश में कर्म की पूजा होती है वही देश आगे बढ़ता है।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) बाधाएँ साहसी पथिकों को रोक नहीं पातीं।
   (ख) परिश्रम करने वालों का जीवन हवन के समान हो जाता है।
   (ग) 'मन का वेश' से तात्पर्य है मन में देश ओर समाज के लिए कार्य करने का उत्साह।
   (घ) जन-जागृति से समाज में चेतना आती है और समाज उचित दिशा की ओर अग्रसर होता है।
2. (क) कवि कहना चाहता है कि लोग केवल बातें बनाते हैं, करते कछ भी नहीं।
   (ख) लंगड़ा से अभिप्राय है जो देश आत्मनिर्भर नहीं है। देश के उत्थान के लिए आत्मनिर्भर होना आवश्यक होता है।
   (ग) ऐसे राजनेता जो केवल कुर्सियों के लालच में पड़े होते हैं, वास्तव में जनसेवा नहीं करते, उन्हें सिंहासन के लोभी कहा गया है।
3. 'पाठ सार' में देखें।
4. (क) उज्ज्वल (ख) पतझड़
   (ग) भविष्य (घ) राजनीति
   (ङ) इंकलाब।

5. श्रम; जीवन हवन; बलिदानी; महामृत्यु; बाधाएँ; मंज़िल; साहसी; वेग; पाँव।

6. संबल-सहारा, वेग-प्रवाह, निर्माण-बनाना, संध्या-शाम, अभाव-कमी।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) मनुष्य को लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लहरों के समान निरंतर प्रवाहित रहना चाहिए अर्थात् निरंतर कार्य करते रहना चाहिए।

(ख) मैं इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ। आज के युवाओं पर ही देश का भविष्य निर्भर होता है। उनकी शक्ति, जीवंतता और साहस देश को शक्तिशाली बनाता है।

पाठ 21. प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकट रमन

◆ **पाठ उद्देश्य**–वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर रमन के जीवन और कृतित्व से अवगत कराना।

◆ **पाठ सार**–सी.वी. रमन का जन्म 7 नवंबर 1888 को तिरूचिरापल्ली में चंद्रशेखर अय्यर और पार्वती के यहाँ हुआ था। उनकी पत्नी का नाम त्रिलोक सुंदरी था। उन्होंने 1904 में बी.ए. की और भौतिकी में स्वर्ण पदक पाया। सन् 1907 में एम. ए. की। वे 'इंडियन एसोसिएशन फ़ॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस' में अनुसंधान करने लगे। वेसन् 1917 में कोलकाता यूनिवर्सिटी में नौकरी करने लगे। सन् 1912 में समुद्र यात्रा करते हुए समुद्र के नीले रंग को देखकर उन्होंने प्रयोग किए और 'रामन प्रभाव' की खोज की। उन्होंने प्रकाश की किरणों का अध्ययन किया। इस खोज ने उन्हें विश्व प्रसिद्ध कर दिया उन्हें 'नोबल पुरस्कार' दिया गया। उनका निधन 21 नवंबर 1970 को हुआ।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) समुद्र को देखकर उनके मन में उसके नीले रंग के विषय में जिज्ञासा हुई। उन्होंने प्रयोग करके 'रामन प्रभाव' की खोज की।
   (ख) उनके पिता ने भौतिकी और गणित की ठोस नींव रखी और इन पर अधिक ध्यान दिलाया।
   (ग) रमन का जन्म 7 नवंबर 1888 को तिरूचिलापल्ली में हुआ। उनके पिता का नाम चंद्रशेखर अय्यर और माता का नाम पार्वती अम्माल था।
2. (क) रमन की खोज ने पदार्थों में अणुओं और परमाणुओं के अध्ययन को सरल बनाया।
   (ख) कॉलेज के दिनों में उनकी रुचि भौतिकी में थी।
   (ग) कोलकाता विश्वविद्यालय में नौकरी करने के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी।
3. (क) 28 फरवरी ✓ (ख) 1904 में ✓
   (ग) 1924 में ✓ (घ) 1930 ✓
4. (क) सी. वी. रमन को अनेक पुरस्कार मिले।
   (ख) रमन ने भौतिकी का अध्ययन किया।
   (ग) रमन महन वैज्ञानिक थे
   (घ) 'रामन प्रभाव' विज्ञान के लिए उपलब्धि थी।
5. (क) प्रथम (ख) 1917
   (ग) रामन प्रभाव (घ) त्रिरूचिरापल्ली
   (ङ) 1945, रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट।
6. अनुसंधान, भौतिकी, परिवर्तन, पदार्थ, प्रकाश।

7. रमन के जीवन से प्रेरणा मिलती है कि हमें जीवन में नई-नई खोज करनी चाहिए और समाज को उत्कृष्ट बनाना चाहिए।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) रामन प्रभाव से पता चलता है कि जब एकवर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या पारदर्शी पदार्थ से गुज़रती है तो उसके वर्ण से परिवर्तन आ जाता है। इसमें सबसे अधिक ऊर्जा बैंगनी रंग, फिर नीले, आसमानी, हरे, नीले, पीले, नारंगी और लाल रंग की होती है।

(ख) चंद्रशेखर वेंकट रमन की वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन ने भारतीय वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का कार्य किया। उनके योगदान से विज्ञान में नए-नए अनुसंधान होने लगे।

पाठ 22. गिरगिट का सपना

◆ **पाठ उद्देश्य**–दूसरों को देखकर उनके जैसे बनने के सपने देखने का परिणाम कष्टदायक होता है, इसे समझाना।

◆ **पाठ सार**–एक गिरगिट था जो अपने बार-बार बदल जाने वाले रंग से परेशान था। वह चाहता था कि उसकी विशेष पहचान बने। उसने साँप को देखा तो उसे साँप का जीवन अच्छा लगा। उसने एक अन्य गिरगिट के कहने पर एक पत्ता खाया और सो गया। वह उठा तो वह साँप बन चुका था। साँप बनने पर उसका सामना नेवले से हो गया। नेवला उस पर आक्रमण करने वाला था। वह छिप गया। उसने सोचा वह नेवला होता तो कितना अच्छा होता। वह नेवला बन गया। वह उछल–उछलकर जा रहा था तो एक पेड़ की टहनी का काँटा लग जाने से वह टहनी में फँस गया। उसने सोचा वह टहनी होता तो कितना अच्छा होता। वह टहनी बन गया। उस पर कौवे बैठ गए। एक ने उस पर बीट कर दी, दूसरे ने उसे कुरेदना शुरू कर दिया। उसने सोचा वह कौवा होता तो कितना

अच्छा होता। वह कौवा बन गया। वह उड़ रहा था तो बच्चों ने गुलेल से निशाना लगाया। वह बच तो गया पर दूसरा कौवा गिर गया। उसने सोचा वह गिरगिट ही ठीक था। वह गिरगिट बन चुका था।

पाठ मूल्यांकन उत्तर

1. (क) गिरगिट जंगल में रहता था। वह अच्छा स्थान था। उसे खाने–पीने की सुविधा थी।
   (ख) गिरगिट अपने बार–बार बदल जाने वाले रंगों से परेशान था। वह इसीलिए उदास रहता था।
   (ग) गिरगिट को लगता था उसे अपने आस-पास के जीवों से ईर्ष्या होती थी क्योंकि उसे उनका जीवन अच्छा लगता था।
   (घ) गिरगिट को लगता कि साँप की खाल सुदंर थी। उससे चूहे-चमगादड़ डरते थे। उसकी ज़िदगी उससे अच्छी थी। इसलिए वह साँप बनना चाहता था।
2. (क) उसे नींद नहीं आ रही थी। एक मित्र गिरगिट ने उसे नींद की पत्ती के बारे में बताया था। वह झाड़ी से पत्ती तोड़कर खा गया।
   (ख) गिरगिट साँप बन गया तो उसका सामना नेवले से हो गया। वह उससे डरकर पेड़ के पीछे छिप गया।
   (ग) इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि हमें अधिक महत्वाकांक्षी नहीं होना चाहिए। गिरगिट साँप, नेवला,पेड़ की टहनी और कौवा बना। अंत में उसे गिरगिट का जीवन ही अच्छा लगा। हमें संतुष्ट रहना चाहिए।
3. (क) गिरगिट मोटा-ताज़ा था।
   (ख) गिरगिट के आस-पास कई जीव-जंतु रहते थे।

(ग) गिरगिट उल्टा-सीधा सोचता था।

(घ) गिरगिट का आस-पड़ोस अच्छा था।

4. (क) महत्वाकांक्षी (ख) जंगल में

(ग) जीव–जंतु (घ) पीला

(ड) ईर्ष्या।

5. नेवले, साँप, गिरगिट, रंग, लहरिया, शिकंजे।

6. (क) शकरकंद की तरह काला

(ख) एक पत्ती

(ग) अधिक कीड़ें-मकौड़े खाने से

(घ) उसकी मनोकामना पूरी हो गई।

(ड) नेवला।

7. (क) नेवला साँप के सामने आया।

(ख) गिरगिट उदास था।

(ग) साँप लहरिया था।

(घ) साँप चूहा खा जाता था।

(ङ) कौवा नीचे गिर गया।

मूल्याधारित प्रश्नोत्तर

(क) गिरगिट कौवा बनकर खुश था। गिरगिट के रूप में वह ज़मीन पर रहता था अब आसमान भी उसके नीचे था।

(ख) मनुष्य अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं होता। वह गिरगिट की तरह औरों की तरह बनना चाहता है। उसकी महत्वाकांक्षाएँ उसे दुखी रखती हैं। गिरगिट की इच्छाएँ पूरी होती चली गईं पर अंत में वह गिरगिट बनकर ही प्रसन्न हुआ। इसलिए मनुष्यों की भी समझना चाहिए कि महत्वाकांक्षाओं का अंत नहीं होता।